संगीत में घरानेदार पद्धति

मुक्ता वार्ष्णेय
शोधार्थिनी
चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

डा0 सुमनलता शर्मा
शोध निर्देशिका

"घराना" शब्द "घर" से उत्पन्न हुआ है। जैसे घर में परिवार की शताब्दियों से चलती आ रही एक परंपरा होती है, नियम व कायदे होते हैं ठीक उसी प्रकार सांगीतिक भाषा में घराने का तात्पर्य उस परंपरा से है जो गुरु शिष्य के मध्य अनेक पीढ़ियों तक विद्यमान रहती है।

"घराना", यह शब्द मुगल काल से मुख्य रूप से प्रचार में आया, जबकि संगीत अपने स्वर्णिम अवस्था में था। माना जाता है कि संगीत सम्राट तानसेन के बाद ही घराने की परंपरा शुरू हुई। "घराना" एक आम प्रचलित शब्द है, जिसका प्रयोग हम रोजमर्रा के जीवन में खानदान, नस्ल, संप्रदाय आदि के लिए करते हैं। संगीत के संदर्भ में भी घराना कुछ इसी अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। संगीत में घराने से अभिप्राय किसी "विशिष्ट गुरु परंपरा" से है। जहां शिष्य अपने गुरू के सम्मुख बैठकर संगीत की शिक्षा, गूण रहस्य, कलाकारी, विशिष्ट शैली या ढंग का ज्ञान अर्जित करता है और ठीक उसी प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान का प्रचार करता है। प्रत्येक गुरु अपनी सोच समझ और मनोवृत्ति के अनुसार संगीत की तालीम दिया करते थे, इन्हीं व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण विभिन्न घरानों का आविर्भाव हुआ।

साधारण रूप से घराना का संबंध वंश परंपरा अथवा शिष्य परंपरा से है। परंतु समयानुसार गुरु से प्राप्त शिक्षा में अपनी ओर से कुछ जोड़कर उसका विकास करना ही घराना पद्धति का महत्वपूर्ण बिंदू है। भारतीय संगीत में ऐसी ही शैलियों ने घराना या परंपरा का रूप प्राप्त किया है। घराना, किसी प्रभावशाली गुरु की आवाज,प्रकृति, विशिष्ट गुणों के अनुसरण परंपरा पर आधारित होता है।

सुशील कुमार चौबे श्घराने संगीतश को श्टकसाली संगीतश भी कहते हैं, इनके अनुसार टकसाली संगीत सच्चा एवं प्रमाणित संगीत है। घराने ऐसे वर्गीय संप्रदाय हैं जिनके संस्थापकों ने अपनी कड़ी मेहनत व लगन से साधना कर अपने कला कौशल पर प्रसिद्धि प्राप्त की, शास्त्रों पर आधारित संगीत में क्रियात्मक रूप से नवीन प्रयोग किए तथा उसे अपनी मनोवृति के अनुसार और मधुर व आकर्षक बनाया।

घरानों का उद्भव –

प्राचीन काल से शिक्षण पद्धति गुरु शिष्य परंपरा पर ही आधारित रही है, जिसमें शिष्यों का एक विशिष्ट समूह गुरु के सानिध्य में शिक्षा प्राप्त करता है और शिक्षण की यह पद्धति एक परंपरा का रूप धारण कर संप्रदाय या घराना परंपरा को जन्म देती है। भारतीय संगीत के कुछ प्राचीन प्रसिद्ध संगीतज्ञों ने अपनी कला प्रतिभा में एक विशेष प्रकार की शैली को जन्म देकर उसे अपने पुत्रों तथा शिष्यों को सिखा कर प्रचलित किया। इन्हीं विशिष्ट शैलियों ने विभिन्न घरानों का रूप लिया।

संगीत का साधन मानवी आवाज है और उसका माध्यम उसमें पाए जाने वाले स्वर। स्वर मानवीय आवाज का एक आंतरिक व गूढ़ धर्म है, उसपर अलग–अलग अलंकार चढ़ाकर गुरु अपने शिष्य के गले को तैयार करने का प्रयास वर्षों तक करते हैं , इसे ही संगीत की भाषा में ष्तालीमष् कहा जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा ष्घरानाष् शब्द ष्घरष् से उत्पन्न हुआ है। जैसे घर में परिवार की शताब्दियों से चलती आ रही एक परंपरा होती है, नियम व कायदे होते हैं ठीक उसी प्रकार सांगीतिक भाषा में घराने का तात्पर्य उस परंपरा से है जो गुरु शिष्य के मध्य अनेक पीढ़ियों तक विद्यमान रहती है।

"घराना", यह शब्द मुगल काल से मुख्य रूप से प्रचार में आया, जबकि संगीत अपने स्वर्णिम अवस्था में था। माना जाता है कि संगीत सम्राट तानसेन के बाद ही घराने की परंपरा शुरू हुई। ष्घरानाष् एक आम प्रचलित शब्द है, जिसका प्रयोग हम रोजमर्रा के जीवन में खानदान, नस्ल, संप्रदाय आदि के लिए करते हैं। संगीत के संदर्भ में भी घराना कुछ इसी अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। संगीत में घराने से अभिप्राय किसी "विशिष्ट गुरु परंपरा" से है। जहां शिष्य अपने गुरू के सम्मुख बैठकर संगीत की शिक्षा, गूण रहस्य, कलाकारी, विशिष्ट शैली या ढंग का ज्ञान अर्जित करता है और ठीक उसी प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान का प्रचार करता है। प्रत्येक गुरु अपनी सोच समझ और मनोवृत्ति के अनुसार संगीत की तालीम दिया करते थे, इन्हीं व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण विभिन्न घरानों का आविर्भाव हुआ।

साधारण रूप से घराना का संबंध वंश परंपरा अथवा शिष्य परंपरा से है। परंतु समयानुसार गुरु से प्राप्त शिक्षा में अपनी ओर से कुछ जोड़कर उसका विकास करना ही घराना पद्धति का महत्वपूर्ण बिंदू है। भारतीय संगीत में ऐसी ही शैलियों ने घराना या परंपरा का रूप प्राप्त किया है। घराना, किसी प्रभावशाली गुरु की आवाज,प्रकृति, विशिष्ट गुणों के अनुसरण परंपरा पर आधारित होता है।

सुशील कुमार चौबे "घराने संगीत" को "टकसाली संगीत" भी कहते हैं, इनके अनुसार टकसाली संगीत सच्चा एवं प्रमाणित संगीत है। घराने ऐसे वर्गीय संप्रदाय हैं जिनके संस्थापकों ने अपनी कड़ी मेहनत व लगन से साधना कर अपने कला कौशल पर प्रसिद्धि प्राप्त की, शास्त्रों

पर आधारित संगीत में क्रियात्मक रूप से नवीन प्रयोग किए तथा उसे अपनी मनोवृति के अनुसार और मधुर व आकर्षक बनाया।

घरानों का उद्भव –

प्राचीन काल से शिक्षण पद्धति गुरु शिष्य परंपरा पर ही आधारित रही है, जिसमें शिष्यों का एक विशिष्ट समूह गुरु के सानिध्य में शिक्षा प्राप्त करता है और शिक्षण की यह पद्धति एक परंपरा का रूप धारण कर संप्रदाय या घराना परंपरा को जन्म देती है। भारतीय संगीत के कुछ प्राचीन प्रसिद्ध संगीतज्ञों ने अपनी कला प्रतिभा में एक विशेष प्रकार की शैली को जन्म देकर उसे अपने पुत्रों तथा शिष्यों को सिखा कर प्रचलित किया। इन्हीं विशिष्ट शैलियों ने विभिन्न घरानों का रूप लिया।

संगीत का साधन मानवी आवाज है और उसका माध्यम उसमें पाए जाने वाले स्वर। स्वर मानवीय आवाज का एक आंतरिक व गूढ़ धर्म है, उसपर अलग–अलग अलंकार चढ़ाकर गुरु अपने शिष्य के गले को तैयार करने का प्रयास वर्षों तक करते हैं , इसे ही संगीत की भाषा में ष्तालीमष् कहा जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा संगीत शिक्षा की गुरु शिष्य परंपरा को प्रत्येक समाज में मान्यता मिली है पर घरानों का आधार केवल गुरु शिष्य परंपरा ही नहीं अपितु विशिष्ट एवं स्वतंत्र सौंदर्यात्मक तत्वों के व्यवहार का योगदान भी है। इस सौंदर्य परिपूर्ण गायकी को सीखने के लिए गुरु के प्रति निष्ठाभाव रहना भी जरूरी है।

डॉक्टर कमलेश सक्सेना के अनुसार घरानेदार गायकी की हिंदुस्तानी संगीत में अपनी विशेषता है। श्री वामनराव देशपांडे के अनुसार घराना और उसका सौंदर्य कलाकार की कल्पना शक्ति पर ही निर्भर करता है, अब तक के सभी उच्च कोटि के कलाकारों ने अपने घरानों का सूत्र कायम रखा है।

घराने की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें एक शैली के अनेकों रूप हैं। ख्याल के गीत एक ही राग से होते हुए भी कई बातों में परस्पर एक दूसरे से भिन्न हैं। गायक अपनी शक्तिनुसार ख्याल का विस्तार कर सकता है। हर गाने को गायक अपने घराने की विशेषता के आधार पर प्रस्तुत करता है । घराने हमारी सामाजिक परंपराओं को धारण करने व साथ ही मनुष्यों को अनुशासन, संयम एवं पूर्वजों के प्रति श्रद्धा रखने की शिक्षा देने का कार्य भी करते हैं।

घरानेदार संगीतज्ञ व्यवसाई होते हुए भी, अधिक परिश्रम करते हुए अपनी संतान को भी कला में निपुण बनाने का प्रयत्न करते थे जिससे उनके बाद भी उनके संगीत की परंपरा निरंतर चलती रहे। क्योंकि घरानेदार कलाकारों को अपनी परंपरा का ही उच्च ज्ञान होता है और अपनी संगीत शैली को विशेष बनाना ही उनका लक्ष्य होता है ।

निष्कर्ष स्वरूप यह मानना कदापि गलत नहीं होगा कि यदि घराने ना होते तो संगीत की परंपरागत विद्या आधुनिक काल तक सुरक्षित ना रह पाती और अवश्य ही अंग्रेजी हुकूमत के क्रूर काल के आड़े आकर लुप्त हो जाती। और आज जो हम अपनी संस्कृति से परीचित हैं, वो कभी ना होते। कहीं ना कहीं यह सत्य है कि घरानों ने हमारी संस्कृति व हर कला की रक्षा का दायित्व निभाया है। घरानों के संदर्भ में यह भी सर्वमान्य है कि अधिकतर उच्च कोटि के कलाकार उत्पन्न करने का गौरव घरानों की शिक्षण पद्धति को ही प्राप्त रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

घरानेदार गायकी – वामनराव देशपांडे (पृ.22)

संगीत के घरानों की चर्चा – डॉक्टर सुशील कुमार चौबे प्रथम संस्करण (पृ. 4–7)

संगीत मधुबन – प्रो.मधुबाला सक्सेना, प्रो. राकेश सक्सेना (पृ.97)

भारतीय संगीत का इतिहास – भगवतशरण शर्मा (पृ. 68)

संगीत रत्नावली – अशोक कुमार श्यमनश (पृ.486– 490)–